भाषा-टीका

अथ

सन्तानगोपालस्तोत्रम

(सरल हिन्दी अर्थ सहित)

सन्तानोत्पत्तिविधानसहितम्

प्रकाशक:

लक्ष्मी प्रकाशन

4734, बल्ली मारान, दिल्ली-6

☏ 23917707

मूल्य : 10 रुपये

विषय-सूची

भूमिका

अपौरुषेय वेदों से लेकर स्मृति पुराण काव्य इत्यादिक सभी ग्रन्थों ने पुत्र की महत्ता का वर्णन किया है। स्थानाभाव होने पर भी हम कुछ लोगों के मत को यहाँ पर प्रदर्शित कर देते हैं। इससे सबको विचारावकाश होना चाहिए।

सोऽस्यायमात्मा पुण्येभ्यः कर्मभ्यः
प्रतिधीयतेऽथास्यायमितर आत्मा कृतकृत्यो
वयोगतः प्रति स इतः प्रयन्नेव पुनर्जायते
तदस्य तृतीयं जन्म।

- एतरेय उप० ४-४

अर्थात् इस संसार में यह पुत्ररूपी आत्मा पुण्यकर्म करने के लिए इसका प्रतिनिधि होकर रह जाता है यथा "आत्मा वै जायते पुत्रः" और वह कृत्यकृत्य होकर महाप्रयाण करता है।

पुत्रशब्देन चैतद्धि नरकात् त्रायते पिता

- शंकर अध्यात्म० रा० २-३-५८

अपुत्रस्त गतिर्नास्ति।

- स्मृति

नूनं प्रसूतिविकलेन मया प्रसिक्तं, धौता-
श्रुशेषमुदकं पितरः पिबन्ति।

-कालिदास

आलक्ष्यदन्तमुकुलाननिमित्तहासैरव्यक्तवर्णरमणी
अयवचः प्रवृत्तीन।
अङ्काश्रयप्रणयिनस्तनयान् वहन्तो

धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवन्ति ॥

-अभि० शाकु० ७-१७

यहाँ पर तो राजा दुष्यन्त पुत्र को गोद में लिये हुए व्यक्ति को जिसका कि अङ्ग धूलि-धूसरित पुत्र के कारण रज रञ्जित हो गया है उसी को धन्य मान रहे हैं। पुत्रानंद के सामने मुनियों के ब्रह्मानन्द को भी तुच्छ माना। निस्संदेह पुत्ररत्न यह लौकिक तथा पारलौकिक उभय फल को प्राप्त कराने वाला है।

यह पुत्र ही का पुत्रत्व था जिसने ६ हजार पितरों का तारण किया, वह पुत्र ही का पुत्रत्व था जिसने इक्कीस बार राजवंशों का संहार किया। श्रवणकुमार आज भी श्रवणगामी हो रहे हैं।

ऐसी अवस्था में विचारणीय यह विषय है कि जिसको पुत्र प्राप्त नहीं है उसके लिए उसकी प्राप्ति के कौन से साधन हो सकते हैं। इस निमित्त आचार्यों ने कई मार्ग बतलाये हैं जिनमें हरिवंश पुराण श्रवण, भौमव्रत, रुद्राभिषेक, वंशगोपाल मंत्र जप, शतचण्डीविधान तथा सन्तानगोपालस्तोत्र इत्यादि अधिक प्रचलित है और इनके प्रयोग द्वारा लोग पुत्रसुख का अनुभव भी करते हैं।

यह सन्तानगोपाल मन्त्रविधि इन्हीं सन्तानप्रद मार्गों में से एक सरल साधन है। हमारे शारदा मन्दिर में करीब ढाई सौ वर्ष की हस्तलिखित प्रति इसकी विधि से पूर्ण थी। वही प्राचीन प्रति यहाँ दी गई है। इसकी विधि के साथ ही साथ यहाँ पुत्रपद नागेन्द्रयन्त्र भी दे दिया है जिसके भजन-पूजन से रमणी शीघ्र ही पुत्रप्रसविनी हो 'जननी' पद की भागी हो जाती है। साथ ही पुत्र प्राप्ति के

अन्य प्रयोग के अन्तर्गत कई मन्त्र, यन्त्र भी दे दिये गये हैं, जिससे अपुत्र भी पुत्रवान हो जाता है।

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

अथ सन्तानगोपालस्तोत्रं प्रारभ्यते

श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम्।
सुतसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम् ॥१॥

अर्थ-पुत्र की प्राप्ति के लिए मैं विष्णु जी, देवकी नन्दन जी, कृष्ण जी, मधुसूदन जी को नमस्कार करता हूँ ॥१॥

नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम्।
यशोदांकगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम् ॥२॥

अर्थ-यशोदा जी की गोद में बैठे हुए बालक कृष्ण नन्द नन्दन जी वासुदेव जी के पुत्र की प्राप्ति हेतु मैं भगवान वासुदेव जी को नमस्कार करता हूँ ॥२॥

अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा ॥३॥

अर्थ-मैं पुत्र लाभ के लिए ऋषियों द्वारा वन्दना किए जाने वाले भगवान गोविन्द, देवकी नन्दन, वासुदेव को सर्वदा नमस्कार करता हूँ ॥३॥

गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम्।
पुत्रसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुङ्गवम् ॥४॥

अर्थ-पुत्र को प्राप्त करने के लिए मैं कमलापति जी, कृष्ण जी, यदुपुंगव जी गोपाल जी को नमस्कार करता हूँ ॥४॥

पुत्रकामेष्टिफलदं कञ्जाक्षं कमलापतिम् ।
देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम ।।५।।

अर्थ-पुत्र कामेष्टि यज्ञ का फल देने वाले, कमल के सदृश सुन्दर नेत्रों वाले भगवान कमलापाति देवकी नन्दन जी को मेरा नमस्कार हो ।।५।।

पद्मायत पद्मनेत्र पद्मनाभ जनार्दन ।
देहि मे तनयं श्रीश वासुदेवजगत्पते ।।६।।

अर्थ-कमल जिनकी नाभि से पैदा हुआ है ऐसे कमल के समान सुंदर नाभि वाले, कमल के सदृश सुंदर नेत्रों वाले भगवान विष्णु, भगवान्, जनार्दन, जगतपिता वासुदेव मेरे शरीर में पुत्र को दो ।।६।।

यशोदांकगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम् ।
अस्माकं पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम् ।।७।।

अर्थ-यशोदा जी की गोद में बैठे हुए, मुनियों द्वारा वन्दना किए जाने वाले बालक गोविन्द जी को मैं पुत्र प्राप्ति हेतु नमस्कार करता हूँ ।।७।।

श्रीपते देवदेवेस दीनार्तिहरणाच्युत ।
गोविन्दं मे सुतंदेहि नमामित्वांजनार्दन ।।८।।

अर्थ-गरीबों के दुखों को दूर करने वाले लक्ष्मीपति देवदेवेस जी, गोविन्द जी मुझ को पुत्र दो जनार्दन भगवान मैं तुमको नमस्कार करता हूँ ।।८।।

भक्तकामद गोविन्द भक्तरक्ष शुभप्रद ।
देही मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभौ।।९।।

अर्थ-भक्तों की कामना पूरी करने वाले, भक्तों की रक्षा करने वाले, शुभ करने वाले कृष्ण जी, रुक्मिणीवल्लभ प्रभो मेरे शरीर में पुत्र को दो ।।९।।

रुक्मिणी नाथ सर्वेश देहि मे तनयं सदा।
भक्तमन्दारपद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः ॥१०॥

अर्थ-हे सर्वेश, हे रुक्मिणी के स्वामी ! मेरे शरीर में पुत्र को दो। भक्तों पर कृपा करने वाले हे कमल के समान सुंदर नेत्रो वाले भगवान विष्णु जी मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥१०॥

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥११॥

अर्थ-देवकी के पुत्र गोविन्द, जगतपति वासुदेव जी मेरे शरीर में पुत्र को देवें। हे कृष्ण जी मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥११॥

वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१२॥

अर्थ-हे वासुदेव जी ! समस्त संसार द्वारा पूजनीय लक्ष्मी जी के स्वामी भगवान विष्णुजी, भगवान् कृष्ण जी मेरे शरीर में पुत्र को दो मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥१२॥

कञ्जाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम।
देहि मे तनयं०॥१३॥

अर्थ-कमल के सदृश सुन्दर नेत्रों वाले हे कमलपति, परम करुणा निधान मेरे शरीर में पुत्र को दो ॥१३॥

लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं०॥१४॥

अर्थ-हे लक्ष्मी जी के स्वामी, पद्म के सदृश नाभि वाले, ऋषियों द्वारा वन्दना किये जाने वाले भगवान मेरे शरीर में पुत्र को दो ॥१४॥

कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा।
नमामि पुत्रलाभार्थं सुखदाय बुधाय ते ॥१५॥
अर्थ-बुद्धि प्रदान करने वाले सुख देने वाले, कार्यकारण स्वरूप वाले भगवान वासुदेव के लिए पुत्र की प्राप्ति हेतु मेरा सदैव नमस्कार है ॥१५॥

राजीव नेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे ॥१६॥
अर्थ-राजीव लोचन भगवान श्री रामजी, रावण को मारने वाले हे देवेश आपके लिए मेरा नमस्कार है। आप मेरे शरीर में पुत्र को दो ॥१६॥

अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते ॥१७॥
अर्थ-हे संसार के स्वामी मैं पुत्र प्राप्ति हेतु आपको भजता हूँ। हे कृष्ण जी, वासुदेव जी, रमापति जी आप मेरे शरीर में पुत्र को दो ॥१७॥

श्रीमानिनीमानदातर्गोपीवस्त्रापहारक।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥१८॥
अर्थ-गोपियों के वस्त्रों का हरण करने वाले, माननीयों के माननीय हे जगतपिता भगवान कृष्ण जी, वासुदेव जी आप मेरे शरीर में पुत्र को दो ॥१८॥

अस्माकं पुत्रसम्प्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन।
रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ॥१९॥
अर्थ-मुनियों के द्वारा वन्दना किये जाने वाले हे मुकुन्द जी, वासुदेव जी, रमापति जी, यदुनन्दन जी आप मुझे पुत्र की प्राप्ति करावें ॥१९॥

वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव।
पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो ॥२०॥
अर्थ-वासुदेव श्रीकृष्णजी मुझे पुत्र देवें, शरीर माधव जी देवें, महाप्रभो मुझे बालक प्रदान करें ॥२०॥

डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन ॥२१॥
अर्थ-श्री कृष्ण जी डिम्भ देवें, भगवान श्री राघव जी आत्मा प्रदान करें और भक्तमन्दार मेरे शरीर में पुत्र को देवें ।२१॥

नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते।
कमलानाथ गोविन्द मुकुन्द मुनिवन्दित ॥२२॥
अर्थ-कमलापति, गोविन्द, मुनियों द्वारा वन्दना किये जाने वाले मुकुन्द, जगत पिता भगवान् श्री कृष्ण जी, वासुदेवजी मुझे पुत्र दो ॥२२॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम॥
सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे ॥२३॥
अर्थ-मैं आपकी शरण में जाता हूँ और किसी की शरण में मैं नहीं जाता। मुझे पुत्र दो, लक्ष्मी दो, पुत्र और लक्ष्मी दोनों दो ॥२३॥

यशोदास्तन्यपानज्ञ पिबन्तं यदुनन्दनम्।
बन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाख्यं हरिं सदा ॥२४॥
अर्थ-यशोदा माता का दुग्ध पीने वाले यदुनन्दन मैं पुत्र प्राप्ति हेतु भगवान कृष्ण जी को सदैव स्मरण करता हूँ ॥२४॥

नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि मे प्रभो।
रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते॥२५॥

अर्थ-नन्दनन्दन, हे देवेश, हे प्रभो मुझे पुत्र दो। रमापते, वासुदेव जी, जगतपिता मुझे लक्ष्मी एवं पुत्र प्रदान करो ॥२५॥

पुत्रश्रियै श्रियं पुत्र कृष्ण मे देहि माधव।
अस्माकं दीनवाक्यम्अवधारय श्रीपते॥२६।

अर्थ-हे कृष्ण जी! हे माधव जी! पुत्र श्री के लिए पुत्र दो। हमारी करुणमयी प्रार्थना को हे श्रीपते अवधारण करो ॥२६॥

गोपाल डिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते।
अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते ॥२७॥

अर्थ-हे जगत के स्वामी गोविन्द, गोपाल, वासुदेव, रमापति हमको डिम्भ दो लक्ष्मी दो ॥२७॥

मद्वाञ्छितं फलं देहि देवकीनन्दनाच्युत।
मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन ॥२८॥

अर्थ-हे देवकीनन्दन! मेरा चाहा हुआ फल मुझको दो। यदुनन्दन जी मुझे पुत्र प्राप्ति के लिए धन्य करो ॥२८॥

याचेऽहं तवां श्रियं पुत्रं देहि मे पुत्रसम्पदम्।
भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष महाप्रभो ॥२९॥

अर्थ-हे भक्तों की चिन्ता को दूर करने वाले कल्पवृक्ष के समान भगवान राम! महाप्रभो मैं आपसे लक्ष्मी एवं पुत्र को माँगता हूँ आप मुझे पुत्र रूपी सम्पत्ति दो ॥२९॥

आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं सुतम्।
अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन ॥३०॥

अर्थ-हे रघुनन्दन! हमें प्रसन्नता देने वाले पुत्र के लिए हमारी पत्नी को डिम्भ प्रदान करें ॥३०॥

वन्दे सन्तानगोपालं माधवं भक्तकामदम् ।
अस्माकं पुत्र सम्प्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतम् ॥३१॥

अर्थ-हम सन्तान गोपाल स्तोत्र को नमस्कार करते हैं । भक्तों की कामना को पूर्ण करने वाले माधव जी श्री कृष्ण जी को हमारे पुत्र प्राप्ति हेतु सदैव नमस्कार है ॥३१॥

अकारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम् ।
क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम् ॥३२॥

अर्थ-जो अकार युक्त हैं, श्री युक्त हैं, क्लीं, युक्त हैं ऐसे गोपाल यदुनन्दन देवकी पुत्र युदुवंशनायक को मैं नमस्कार करता हूँ ॥३२॥

वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत ।
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो ॥३३॥

अर्थ-हे लक्ष्मीपति, हे वासुदेव, हे मुकुन्देश, हे गोविन्द, हे कृष्ण, हे अच्युत, हे माधव, हे महाप्रभो मुझे पुत्र प्रदान करो ॥३३॥

राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो ।
समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा ॥३४॥

अर्थ-हे कमल के सदृश नेत्रों वाले गोविन्द, हे पीले नयन वाले, हे प्रभो सर्व मनोरथों को पूर्ण करने वाले मुझे सदा पुत्र दो ॥३४॥

अब्जपद्मनिभः पद्मवृन्दरूप जगत्पते ।
देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव ॥३५॥

अर्थ-हे भगवान विष्णु, हे कमल नेत्र, हे कमल के समूह के समान जगत के स्वामी, हे लक्ष्मी पति, हे माधव मुझको श्रेष्ठ पुत्र का वरदान दो ॥३५॥

नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥३६॥

अर्थ-हे रुक्मिणि के स्वामी कृष्णजी, हे नन्द लाल, हे पृथ्वी के पालन करने वाले, हे गोविन्द, हे यदुनन्दन मुझे पुत्र दो ॥३६॥

दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत ।
गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि मे तनयं श्रियम् ॥३७॥

अर्थ-हे गोविंद, हे माधव, हे मुकुन्द हे अच्युत , हे गोपाल, हे क़मल के सदृश नेत्रों वाले मुझे लक्ष्मी और पुत्र दो ॥३७॥

यदुनायक पद्मेश नंदगोपबधूसुत ।
देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक ॥३८॥

अर्थ-हे यदुनायक, हे कमलापति, हे नन्द के पुत्र, हे गीधर, हे प्राणनायक, हे कृष्ण मुझे पुत्र प्रदान करो ॥३८॥

अस्माकं वाञ्छितं देहि पुत्रं देहि रमापते ।
भगवान् कृष्ण सवश वासुदेव जगत्पते ॥३९॥

अर्थ-हे सबके स्वामी भगवान कृष्ण, हे लक्ष्मीपति, हे वासुदेव, हे संसार के स्वामी हमारा चाहा हुआ पुत्र हमें प्रदान करो ॥३९॥

रामाहृदयसम्भार सत्यभामामनः प्रिय ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥४०॥

अर्थ-हे रुकमणि के स्वामी, हे सत्यभामा के हृदय को प्रिय लगने वाले, हे कृष्ण भगवान मुझे पुत्र दो ॥४०॥

चन्द्रसूर्याक्ष गोबिन्द पुण्डरीकाक्ष माधव ।
अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते ॥४१॥

अर्थ-हे गोविन्द,हे कमल के सदृश नेत्रों वाले भगवान विष्णु, हे माधव, हे जगत्पति, चन्द्रमा और सूर्य आपके नेत्र हैं। हमारे भाग्य में जो श्रेष्ठ पुत्र है, वह हमें प्रदान करें ॥४१॥

कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभ समर्चित।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकी नन्दनन्दन ॥४२॥

अर्थ-हे करुणा की मूर्ति, हे कमल के समान नेत्रों वाले, हे कमल के समान नाभी वाले भगवान् विष्णु जी, हे देवकी और नन्द को आनंद देने वाले कृष्ण जी मुझे पुत्र दो ॥४२॥

देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते।
समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा ॥४३॥

अर्थ-हे देवकी सुत, हे श्रीनाथ, हे वासुदेव, हे संसार के स्वामी समस्त इच्छाओं को पूर्ण करनेवाले मुझे सदा पुत्र दो ॥४३॥

भक्तमन्दार गम्भीर शंकराच्युत माधव।
देहि मे तनयं गोपबालवत्सक श्रीपते ॥४४॥

अर्थ-मंदार पुष्प की भाँति भक्तों को प्रफुल्लित करने वाले हे शंकर जी, हे कृष्ण जी हे माधव जी, हे श्री लक्ष्मीपति जी मुझे पुत्र प्रदान करो ॥४४॥

श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो ॥४५॥

अर्थ-हे श्रीपते, हे वासुदेव, हे देवकी के प्रिय पुत्र भगवान कृष्ण, भक्तों को प्रसन्न करने वाले मुझे पुत्र प्रदान करो ॥४५॥

जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे।
वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो ॥४६॥

अर्थ-हे पृथ्वीपति, हे दयानिधि, हे जगत के स्वामी, हे लक्ष्मी पति, हे वासुदेव, सबके स्वामी मुझे पुत्र दो ॥४६॥

श्रीनाथ कमलानाथ वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४७॥

अर्थ-हे श्रीनाथ, हे कमलापति, हे वासुदेव, हे संसार के स्वामी मुझे पुत्र दो। हे कृष्ण जी मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥४७॥

दासमन्दार गोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४८॥

अर्थ-भक्तों की चिन्ता करने वाले, मंदार पुष्प की भाँति प्रफुल्लित हे प्रभो गोविन्द मुझे पुत्र प्रदान करो मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥४८॥

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४९॥

अर्थ-हे गोविन्द, हे कमलनयन, हे रमापति, हे महाप्रभो, हे कृष्ण भगवान मुझे पुत्र दो मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥४९॥

श्रीनाथ कमलानाथ गोविन्द मधुसूदन।
मत्पुत्रफलसिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनार्दन ॥५०॥

अर्थ-हे लक्ष्मीपति, हे कमलापति, हे गोविन्द, हे मधुसूदन, हे जनार्दन मैं अपने पुत्र की प्राप्ति की सिद्धि के लिए आपका भजन करता हूँ ॥५०॥

स्तन्यं पिबतं जननीमुखाम्बुजं विलोक्य
मन्दस्मितमुज्ज्वलांगम् ।

स्पृशन्तमन्यस्तनमङ्गुलीभिर्वन्दे
यशोदांकगतं मुकुन्दम् ॥५१॥

अर्थ-कमल के समान मुख वाली माता के स्तन्य पीते हुए, मन्द-मन्द मुस्कराते हुए, उज्ज्वल अगों वाले, अंगुलियों से स्तन्यों को पकड़े हुए, यशोदाजी की गोद में बैठे हुए भगवान श्री कृष्ण जी को देखकर मैं उनको नमस्कार करता हूँ ॥५१॥

याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मसोचनं।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥५२॥

अर्थ-हे कमल के समान नेत्रों वाले कृष्ण जी मैं आपसे पुत्र संतान माँगता हूँ। मुझे पुत्र दो। मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥५२॥

अस्माकं पुत्रसम्पत्त्यै चिन्तयामि जगत्पते।
शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवन्दित ॥५३॥

अर्थ-हे जगत के स्वामी मैं पुत्र रूपी संपत्ति के लिये चिन्तित हूँ। हे प्रभो आप मुनियों द्वारा पूजनीय हैं। मुझे शीघ्र पुत्र प्रदान कीजिए ॥५३॥

वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम।
कुरु मां पुत्रदानं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित ॥५४॥

अर्थ-हे वासुदेव, हे जगन्नाथ , हे श्रीपति, हे पुरुषोत्तम, इन्द्र द्वारा पूजे जाने वाले हे कृष्ण मुझे पुत्र का दान दीजिए ॥५४॥

कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदाप्रियनन्दन।
मह्यं वै पुत्रसन्तानं दातव्यं भवता हरे ॥५५॥

अर्थ-पुत्र को देने वाले हे यशोदा के प्रिय पुत्र कृष्ण जी

हे हरि मुझको पुत्र सन्तान दीजिए ॥५५॥

वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत ।
देहि मे तनयंराम कौशिल्याप्रियनन्दन ॥५६॥

अर्थ-हे कौशल्या के प्रिय पुत्र श्री राम, हे वासुदेव, हे जगन्नाथ, हे गोविन्द, हे देवकी के पुत्र कृष्ण जी मुझे पुत्र दो ॥५६॥

पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णो वामन माधव ।
देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव ॥५७॥

अर्थ-हे गोविन्द, हे वामन, हे माधव, हे कमल के पत्रों के समान नेत्रों वाले भगवान् विष्णु जी, हे सीतापति, हे राघव मुझे पुत्र प्रदान करो ॥५७॥

कञ्जाक्ष कृष्ण देवेन्द्र ईडय वै मुनिवन्दित ।
लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा ॥५८॥

अर्थ-कमल के समान सुंदर नेत्रों वाले हे कृष्ण, मुनियों द्वारा पूजित, इन्द्र द्वारा पूजे जाने वाले, लक्ष्मण जी के बड़े भ्राता श्री राम मुझे सदा पुत्र प्रदान करो ॥५८॥

देहि मे तनयं राम दशरथप्रियनन्दन ।
सीतानायक कञ्जाक्षमुचुकुन्दवरप्रद ॥५९॥

अर्थ-हे राम, हे दशरथ के प्रिय पुत्र, कमल के समान सुंदर नेत्रों वाले हे सीतापति, मुचकुंद राजा को वर देने वाले मुझे पुत्र दो ॥५९॥

विभिषणाष्य या लंका भवता दीयते पुरा ।
अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव ॥६०॥

अर्थ-आपने जो पहले विभीषण को लंका दी थी उसी तरह हे माधव हमको पुत्र दो ॥६० ॥

भवदीयपदाम्भोजं चिन्तयामि निरन्तरम् ।
देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव ॥६१॥

अर्थ-मैं आपके चरण कमलों का निरंतर ध्यान करता हूँ। हे सीता के प्रणों से प्यारे राम मुझे पुत्र दो ॥६१॥

राममत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद ।
देहि मे तनयं श्रीशकमलासनवन्दित ॥६२॥

अर्थ-हे राम मेरी पुत्र प्राप्ति की कामना को वर प्रदान कीजिए। कमल रूपी आसन पर सुशोभित पूजे जाने योग्य हे लक्ष्मीपति मैं आपको नमस्कार करता हूँ । मुझे पुत्र दो ॥६२॥

राम राघव सीतेश लक्ष्मणनुज देहि मे ।
भाग्यवत्पुत्रसन्तानं दशरथात्मज श्रीपते ॥६३॥

अर्थ-हे राम, हे राघव, हे सीतापति, हे लक्ष्मण के बड़े भाई, हे दशरथ जी के पुत्र, हे लक्ष्मीपति मुझे भाग्यवान पुत्र की संतान को दीजिए ॥६३॥

देवकीगर्भसञ्जात यशोदाप्रियनन्दन ।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव॥६४॥

अर्थ-हे यशोदा के प्यारे पुत्र, हे देवकी के गर्भ से उत्पन्न हुए कृष्ण, हे गोपाल, हे माधव, हे राम मुझे पुत्र दो ॥६४॥

कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शंकर ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक॥६५॥

अर्थ-हे कृष्ण, हे माधव, हे गोविन्द, हे वामन, हे शंकर, हे अच्युत, हे श्रीपति, हे ग्वाल-बालों के नायक मुझे पुत्र दो ॥६५॥

गोपबालमहाधन्य गोविन्दाच्युत माधवा।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥६६॥

अर्थ-हे गोविन्द, हे अच्युत, हे माधव, हे ग्वाल-बालों के महाधन्य, हे संसार के स्वामी, हे वासुदेव, हे कृष्ण जी मुझे पुत्र दो ॥६६॥

दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयं
दिशतु दिशतु श्रीशो भावयेत्पुत्रलाभम्।
दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामभद्रो
दिशतु दिशतु पुत्रं वंशविस्तारहेतोः ॥६७॥

अर्थ-हे देवकी के पुत्र मुझे यह पुत्र दो, यह पुत्र दो। हे लक्ष्मीपति मेरी पुत्र लाभ की भावना को देओ देओ। हे लक्ष्मीपति, हे राघव, हे रामभद्र मुझे वंश की वृद्धि के लिए पुत्र प्रदान करो, प्रदान करो ॥६७॥

दीयतां वासुदेवेश तनयं मत्प्रियं सुतम्।
कुमारं नन्दनं सीतानायकेश सदा मम ॥६८॥

अर्थ-हे सीता के नायक प्रभो, हे वासुदेव, हे कुमार, हे नन्दन मुझे सदा मेरे प्यारे पुत्र को दो ॥६८॥

राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥६९॥

अर्थ-हे राम, हे राघव, हे गोविन्द, हे देवकी के पुत्र कृष्ण, हे माधव, हे ग्वाल-बालों के नायक मुझे पुत्र दो ॥६९॥

वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७०॥

अर्थ-हे मधुसूदन मुझे वंश का विस्तार करने वाले पुत्र को दो। मुझे पुत्र दो, पुत्र दो। मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥७०॥

ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७१॥

अर्थ-हे कृष्ण, हे कंस को मारने वाले मेरा चाहा हुआ पुत्र मुझे दो। मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥७१॥

चन्द्रा र्ककल्पपर्यन्त तनयं देहि माधव।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७२॥

अर्थ-हे माधव, युग के अन्त तक रहने वाले चन्द्रमा तथा सूर्य के समान मुझे पुत्र दो। मुझे पुत्र दो, मुझे पुत्र दो। मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ॥७२॥

विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमतं तनयं सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दनः सदा ॥७३॥

अर्थ-हे कृष्ण, हे देवकी के पुत्र, मुझे सदा विद्यावान्, बुद्धिमान्, लक्ष्मीवान् पुत्र प्रदान करो ॥७३॥

नमामि त्वां पद्मनेत्रं सुतलाभाय कामदम्।
मुकुन्द पुण्डरीकाक्ष गोविन्द मधुसूदन ॥७४॥

अर्थ-हे कमल पत्र के सदृश सुन्दर नेत्रों वाले भगवान कृष्ण, हे मुकुन्द, हे कमलनयन, हे गोविन्द, हे मधुसूदन, पुत्र लाभ की इच्छा को लिए हुए मैं आपको नमस्कार करता हूँ ॥७४॥

भगवन् कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद।
देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः ॥७५॥

अर्थ-हे भगवन्, हे कृष्ण, हे गोविन्द, समस्त मनोरथों को पूरा करने वाले हे स्वामी मुझे पुत्र प्रदान करो मैं आप की शरण को प्राप्त होता हूँ ॥७५॥

स्वामिंस्त्वं भगवन् राम कृष्ण माधव कामदा ।
देहि मे तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः ।।७६।।

अर्थ-हे स्वामी, हे भगवन्, हे राम, हे कृष्ण, हे इच्छाओं को पूर्ण करने वाले माधव मुझे पुत्र प्रदान करो। मैं नित्य आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ।।७६।।

तनयं देहि गोविन्द कञ्जाक्ष कमलापते ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ।।७७।।

अर्थ-हे गोविन्द, हे कमलापति, हे कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाले मुझे पुत्र दो, मुझे पुत्र दो। मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ।।७७।।

पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्नजनक प्रभो ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ।।७८।।

अर्थ-हे लक्ष्मीपते, हे कमलपत्र के समान सुन्दर नेत्रों वाले, हे प्रद्युम्न जनक प्रभो मुझे पुत्र दो, मुझे पुत्र दो। मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ।।७८।।

शङ्खचक्रगदाखड्गशार्ङ्गपाणे रमापते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ।।७९।।

अर्थ-हे शंख, चक्र, गदा, खडग्, शारंगपाणि को धारण करने वाले रमापति कृष्ण मुझे पुत्र दो मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ।।७९।।

नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन ।
सुतं मे देहि देवेश पद्मसद्मानुवन्दित ।।८०।।

अर्थ-हे नारायण, हे लक्ष्मीपति, हे कमल पत्र के समान सुन्दर नेत्रों वाले, पद्मासन द्वारा पूजे जाने वाले हे कृष्ण मुझे पुत्र दो ।।८०।।

राम राघव गोविन्द देवकीवरनन्दन।
रुक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित।।८१।।

अर्थ-हे राम, हे राघव, हे गोविन्द, हे देवकी के पुत्र, हे रुक्मिणी के स्वामी, सब नारद आदि देवताओं द्वारा पूजे जाने वाले ।।८१।।

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालक त्रायक ।।८२।।

अर्थ-हे देवकी के पुत्र, हे गोविन्द, हे वासुदेव, हे संसार के स्वामी, हे ग्वाल-बालों के नायक मुझे पुत्र दो ।।८२।।

मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं० ।।८३।।

अर्थ-ऋषियों द्वारा पूजे जाने वाले हे गोविन्द, हे रुक्मिणी के प्राणप्रिय प्रभो मुझे पुत्र दो ।।८३।।

गोपिकार्जितपंकजे मकरन्दासक्तमानस।
देहि मे तनयं० ।।८४।।

अर्थ-गोपिकाओं द्वारा पूजे जाने वाले, कमल में मकरन्द के समान हृदय वाले मुझे पुत्र दो ।।८४।।

रमाहृदयपद्मलोल श्रीश माधव कामद।
ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ।।८५।।

अर्थ-लक्ष्मीजी के हृदय में कमल के समान लहराने वाले हे लक्ष्मीपति, इच्छाओं को देने वाले हे मा व मेरा चाहा हुआ पुत्र मुझे दो। मैं आपकी शरण को प्राप्त होता हूँ ।।८५।।

वासुदेव रमानाय दासानां मङ्गलप्रद।
देहि मे तनयं० ।।८६।।

अर्थ-हे वासुदेव, हे रमानाथ, सेवकों का कल्याण करने वाले मुझे पुत्र दो ॥८६॥

कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित ।
देहि मे तनयं० ॥८७॥

अर्थ-कल्याण करने वाले हे गोविन्द, मुनियों द्वारा पूजे जाने वाले हे मुरारी मुझे पुत्र दो॥८७॥

पुत्रप्रद मुकुन्देश रुक्मिणीवल्लभप्रभो ।
देहि मे तनयं० ॥८८॥

अर्थ-हे पुत्र को देने वाले मुकुन्देश, हे रुक्मिणी के प्राणप्रिय प्रभो मुझे पुत्र दो ॥८८॥

पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं० ॥८९॥

अर्थ-हे कमलपत्र के समान सुन्दर नेत्रों वाले, हे गोविन्द, हे वासुदेव, हे संसार के स्वामी मुझे पुत्र दो ॥८९॥

दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ।
देहि मे तनयं० ॥९०॥

अर्थ-हे दया के स्वामी, हे वासुदेव, मुनियों द्वारा पूजे जाने वाले हे मुकुन्द मुझे पुत्र दो ॥९०॥

पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देवपूजितम् ।
वन्दामहे सदा कृष्णं पुत्रलाभप्रदायिनम् ॥९१॥

अर्थ-पुत्र की संपत्ति को देने वाले, देवताओं द्वारा पूजे जाने वाले हे गोविन्द मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे कृष्ण जी आप सदा पुत्र लाभ को देने वाले हैं ॥९१॥

कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय मुरारये ।
वन्दामि पुत्रलाभार्थं देहि मे तनयं विभो ॥९२॥

अर्थ-हे दया के सागर, हे गोपियों के प्रिय, हे मुरारी मैं आपको पुत्र लाभ के लिए नमस्कार करता हूँ, आप मुझे पुत्र दो ॥९२॥

नमस्तस्मै रमेशाय रुक्मिणीवल्लभाय ते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९३॥

अर्थ-उस रमेश के लिए तथा रुक्मिणी के प्राणप्रिय के लिए मेरा नमस्कार है। हे ग्वाल बालों के नायक मुझे पुत्र दो ॥९३॥

नमस्ते वासुदेवाय नित्यं श्रीकामुकाय च।
पुत्रदाय च शेषेन्द्रशायिने रङ्गशायिने ॥९४॥

अर्थ-मैं सदा वासुदेव के लिए, लक्ष्मीपति के लिए, सर्प की शैय्या पर शयन करने वाले के लिए, पुत्र को देने वाले के लिए, रंगशायिने के लिए नमस्कार करता हूँ ॥९४॥

शेषशायिन् रमानाथ मङ्गलप्रद माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९५॥

अर्थ-हे सर्प की शैय्या पर शयन करने वाले लक्ष्मी पति, हे कल्याण दायक माधव, हे ग्वाल-बालों के नायक मुझे पुत्र दो ॥९५॥

दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते ॥९६॥

अर्थ-गरीबों पर मन्दार पुष्प की तरह प्रफुल्लित होने वाले हे राघव मुझ सेवक को पुत्र दो। हे रमापति मुझे पुत्र दो, मुझे पुत्र दो ॥९६॥

यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा।
देहि मे तनयं० ॥९७॥

अर्थ-यशोदा के शरीर में चाहे हुए पुत्र को हमेशा दान करने में लगे हुए मुझे पुत्र दो ॥९७॥

मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जनार्दन ।
देहि मे तनयं० ॥९८॥

अर्थ-मेरे पूज्य देव हे गोविन्द, हे वासुदेव, हे जनार्दन मुझे पुत्र दो ॥९८॥

नीतिमान्धनवान्पुत्री विद्यावांश्रव प्रजायते ।
भगवंस्त्वत्कृपायाश्रव वासुदेवेन्द्रपूजित॥९९।

अर्थ-हे भगवान आपकी कृपा से वासुदेव और इन्द्र द्वारा पूजित नीतिवान धनवा की पुत्री विद्यावान् पुत्र को पैदा करती है॥९९॥

यः पठेत्पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान्भवेत् ।
श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्ररत्नं सुखाय च ॥१००॥

अर्थ-जो इस पुत्र शतक को पढ़ता है वह भी सत्पुत्र वाला हो जाता है और भगवान वासुदेव द्वारा कहा गया यह स्तोत्र रूपी रत्न सुख को देने वाला है ॥१००॥

जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धर्नाश्रियम ।
ऐश्वर्यं राजसम्मानं सद्यो याति न संशयः ॥१०१॥

अर्थ-जप के समय में पुत्र लाभ के लिये, धन के लिए, लक्ष्मी के लिए, ऐश्वर्य के लिए तथा राज सम्मान के लिए जो इसको नित्य पढ़ता है वह निश्चित सफल होता है इसमें कोई संदेह नहीं है ॥१०१॥

।इति लक्ष्मीकेशवसंवादे सन्तानगोपालस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीः

सन्तानगोपालादर्शः

(सन्तानोत्पत्तिविधानम्)

नत्वा श्रीकृष्णचरणौ श्रीशम्भुपदपङ्कजौ।
वन्दे वाणीं गणेशं च भास्करं सततं मुदा॥
आनन्दी जननी पदाब्जयुगलं नत्वा च ध्यात्वा पुनः
श्रीमच्छत्रधरस्य पादयुगलं ध्यात्वा मुहुः सादरम्।
पुत्रोत्पत्तिहिताय सर्वजगतां सन्तानगोपालक-
मादर्शं तु सयन्त्रकं वितनुते नागेन्द्रयन्त्रान्वितम्॥

पुत्रेच्छः यजमानः सपत्नीकः स्नानं कृत्वा नवीनवस्त्रं परिधाय सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म विदय करिष्यमाणजपस्थाने पूर्वाभिमुख उपविश्य स्वदक्षिणे पत्नीं चोपवेशयेत्। मार्जनं पवित्रधारणं कृत्वाऽऽचम्य प्राणानायम्य विष्णुस्मरणं कृत्वा घृतदीपं प्रज्वाल्य पात्रोपरि स्थापयेत्। ततः-
देशकालौ संकीत्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं मम धर्मपत्न्यां चिरञ्जीवशुभसन्तानप्राप्त्यर्थं श्रीवंशगोपालवासुदेवप्रीतये सन्तानगोपालमन्त्र-लक्षसंख्यापरिमितंजपं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। एतत्कार्यपरिपूरणार्थं कलशोपरि श्रीवासुदेवस्थापनं पूजनं च करिष्ये। तन्निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं वरुणकलशस्थापनं च करिष्ये।
आचार्यवरणम्।

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकश-र्माहमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। आचार्यस्य 'वृतोऽस्मि करिष्यामी'-तिप्रतिवचनम्।

आचार्य को वस्त्र अलंकार से पूजे और ऋत्विज(जपकर्ता) को भी वस्त्रालंकारादि से पूजे।

जपविधिः

जपकर्ता स्नान कर नित्यकर्म से निवृत्त हो आचमन कर प्राणायाम करके-

देशकालौ संकीत्य अमुकगोत्रस्य अमुकशर्मणो यजमानस्य धर्मपत्न्यां चिरञ्जीवशुभसन्तानप्राप्त्यर्थ लक्षादिसंख्यान्तर्गतयथोक्तसंख्यां प्रारभ्यै-तत्संख्यापर्यन्तं सन्तानगोपालमन्त्रस्य जपमहं करिष्यामि।

इस प्रकार संकल्प कर त्रिकोण लिखकर- उसकी पूजा कर आसन बिछाकर उस पर पूर्वाभिमुख वा उत्तराभिमुख बैठ भूशुद्धि-भूतशुद्धि-प्राणप्रतिष्ठा-अन्तर्मातृका-बहिर्मातृका न्यास करके पञ्चाङ्ग वा षडङ्ग करके जप करे।

प्रतिदिन स्थापित मूर्ति की पूजा आर्ति यजमान वा जपकर्ता जब तक विसर्जन न हो तब तक बराबर करे।

पुत्रप्रदकृष्णमन्त्राः (गौतमीये मन्त्रचन्द्रिकायां च)-अथ सन्तानसंसिद्धौ प्रजपेन्मासमात्रकम्। यस्य विज्ञानमात्रेण मन्त्राः सिद्धयन्ति मन्त्रिणः॥

जिस मन्त्र के विज्ञानमात्र से साधकों के मन्त्र सिद्ध होते हैं, उस मन्त्र को पुत्र की अभिलाषा पूर्ण करने के लिये एक मास जपे।

(१)

ऊँ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः ।
अनुष्टुप् छन्दः ।
श्री कृष्णो देवता ।
ग्लौं बीजम् ।
नमः शक्तिः ।
पुत्रार्थे जपे विनियोगः ।
पादेन समस्तेन च पञ्चाङ्गानि - देवकीसुत गोविन्द हृदयाय नमः ।
वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा ।
देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट् ।
त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम् ।
ऊँ नमः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्रमध्यतः ।
प्रददत् तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः ॥1॥

मन्त्र (३२ अक्षर का)

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥
लक्षं जपः, मधुरात्कतिलैर्दशांशहोमः ।

(२) मन्त्रान्तरम्

ऊँ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः ।

अनुष्टुप् छन्दः ।

श्री कृष्णो देवता ।

ग्लौं बीजम् ।

नमः शक्तिः ।

पुत्रार्थे जपे विनियोगः ।

तत पञ्चाङ्गानि यथा ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं

देवकीसुत गोविन्द हृदयाय नमः ।

वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा ।

देहि में तनयं कृष्ण शिखायै वषट् ।

त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम् ।

ऊँ नमः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

बैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम् ।
किरीटिसारथिं पुत्रानानयन्तं परात्परम् ॥1॥
आदाय ताञ्जलस्थांश्रव गुरवे वैदिकाय च ।
अर्पयन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थमच्युतम् ॥2॥

मन्त्रः अर्णः ३७

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

(३) पुनर्मन्त्रान्तरम् *

ऊँ अस्य श्री सन्तानगोपालमन्त्रस्य दुर्वासा ऋषिः ।

अनुष्टुप् छन्दः ।

श्री कृष्णो देवता ।

पुत्रार्थे जपे विनियोगः ।
दीर्घयुक्तकामबीजेन षडङ्गः ।
ऊँ क्लाँ हति हृदि ।
ऊँ क्लीं इति शिरसि ।
ऊँ क्लूँ शिखायै ।
ऊँ क्लैं कवचम् ।
ऊँ क्लौं नेत्रम् ।
ऊँ क्लः अस्त्रम् ।
ऊँ क्लाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ऊँ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ऊँ क्लँ मध्यमाभ्यां नमः ।
ऊँ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ऊँ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ऊँ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
ऊँ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बधनं कुर्य्यात् ।

---

*ऊँ क्लीं देवकीसुत गो० इस मन्त्र का निम्नलिखित विनियोगादि है । इसका षडङ्ग दीर्घयुत कामबीज से लेकर दिग्बन्धन करने के बाद मूल मन्त्र से भी न्यास करना किसी आचार्य का मत है और उनके मत से यह ध्यान है-शङ्खचक्रधरं देव श्यामवर्ण चतुर्भुजम् । सर्वाभरणसंदीप्तं पीतवासःसमन्वितम् ॥१॥ मयूरपिच्छसंयुक्त विष्णुतेजोपबृहितम् । समर्पयन्त विप्राय नष्टानानीय बालकान् ॥२॥ करुणामृतसम्पूर्ण चेष्टैकनिलयं त्वजम् ॥ स्त्रीमिस्तु-म्ताते सम्मुखसन्निविष्टममले रक्ताम्बुजे बालकम्, माणिक्याञ्जवलबालभूषणगतं सतप्त हृदद्युतिम् । प्रेम्णाऽऽलिङ्गय मुहर्मुहः सुखवशात्सल्लालित रवात्मना, पुत्रत्वन विभावयेन्मुररिपुं पुत्रार्थिनी कामिनी ॥१॥

अथ ध्यानम्

बर्हापीडाभिरामं मृगमदतिलकं कुण्डलभ्रान्तगण्डं
कञ्जाक्षं कम्बुकण्ठं स्मितसुभगसमुखं स्वाधरे
न्यस्तवेणुम् श्यामं खण्डं त्रिभङ्गं रविकरवसनं
भूषितं वैजयन्त्या वन्दे वृन्दावनस्थं युवतिशतवृतं
ब्रह्मगोपालवेषम् ॥१॥

मन्त्रः ३४ अर्णः

ऊँ क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥
अयमेव मन्त्रः प्रणवरहितः त्रयस्त्रिशदर्णः
गौतमीये-अनेन मन्त्रितं त्वाज्यं पुत्रसिद्धिकरं परम् ।
अनेन जलपानेन बन्धया वर्षाल्लभेत् प्रजाम् ॥
अन्यत्सवं पूर्ववत्-

(४) मन्त्रान्तरञ्च

ऊँ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः ।
गायत्री छन्दः ।
श्री कृष्णो देवता ।
क्लीं बीजम् नमः शक्तिः ।
पुत्रार्थे जपे विनियोगः ।

क्लां क्लीं इत्यादि षडङ्गः, यथा

क्लां हृदयाय नमः ।
क्लीं शिरसे स्वाहा ।
क्लूं शिखायै वषट् ।

क्लैं कवचाय हुम्।
क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
क्लः अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

शंखं चक्रं गदां पद्मं दधानं सूतिकागृहे।
अङ्के श्यानं देवक्याः कृष्णं बन्दे विमुक्तये॥

मन्त्रः १५ अर्णः,

ऊँ नमो* भगवते जगत्सूतये नमः लक्षत्रयजपः,
अन्यत् सर्व प्राग्वत्।

(५) मन्त्रः ३४ अर्णः,

क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥
क्लीं। अन्यत् पूर्ववत्-

(६) मन्त्रान्तरम्

ऊँ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः।
देवी गायत्री छन्दः।
सन्तानगोपालो देवता।
गं बीजम्।
स्वाहा शक्तिः।
क्लीं कीलकम्।
अमुक्याः सन्तानार्थे जपे विनियोगः।
गां क्लीं हृत इत्यादि षडङ्गः।

*ऊँ नमो भगवते जगदात्मसूतये नमः, केचिदनेन प्राकरेण पटन्ति

अथ ध्यानम्

अङ्गनामङ्गनामन्तरे माधवं माधवं चान्तरेणाङ्गना।

इत्थमाकल्पिते मण्डले मध्यगः संजगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥

मन्त्रः २६ अर्णः,

ॐ क्लीं गं षोडशसहस्त्रगोपस्त्रीविहारदक्ष सन्तानं कुरु-कुरु स्वाहा।

अन्यत् पूर्ववत्।

अथ सनत्कुमारोक्तसन्तानगोपालमन्त्रः

(७)

ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः।
अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्ण देवता।
पुत्रार्थे जपे विनियोगः।
ग्लौं हृ० क्लीं शिरसे।

अथवा

देवकीसुत गोविन्द हृदयाय०।
वासुदेव जगत्पते शिरसे०।
देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै०।
त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्।
समस्तपदैः अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

शंखं चक्रं गदा पद्मं धारयन्तं जनार्दनम् ।
अंके शयानं देवक्याः सूतिकामन्दिरे शुभे ॥
एवंरूपं सदा कृष्ण सुतार्थं भावयेत् सुधीः ।

मन्त्रः ३३ अर्णः

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥
लक्षत्रयं जपेत् ।

पूजाविधिः

वैष्णवीपीठे समावाह्य समर्चयेत् ।
अगैः प्रथमावृत्तिः, इन्द्रादिभिः द्वितीयाः वज्रादिभिः तृतीया ।
दशम्यपररात्रे तु शुक्लपक्षेऽर्चयेद्धरिम् ।
पूजार्थं स्वस्तिकं न्यस्य शरावं घृतसंयुतम् ॥
कर्पूरवर्तिं सन्यस्य ज्वालयेद दीपमुत्तमम् ।
पद्मष्टदलं कृत्वा तत्रस्थं कृष्णमर्चयेत ॥
*सर्वोपचारसंयुक्तं सम्पूर्य कलशद्वयम् ।
तत्रावाह्याच्युतं भक्त्या प्रोक्तवत् पूजयेत पुनः ॥
सम्पूज्य कलशद्वन्द्वमष्टात्तरसहस्त्रकम् ।
अष्टोत्तरशतं वापि जपेनमन्त्र मनन्यधीः ।
द्वादश्यामथ गोविन्दं सम्पूज्य विधिपूर्वकम् ।
शाल्यन्नं पायसं स्वादु गोसर्पिर्गुडमिश्रितम् ॥
पक्वान्नं फलवत् सर्वं ससृपं च सतण्डुलम् ।
स्वाद्पदंशं सुस्निग्धं कपिलादधिखण्डत् ।

* परिवारिवृक्षकषायेण ।

निवेदयेत्स्वर्णपात्रे पात्रभूताय विष्णवे ।
सुशीतलैश्च कर्पूरैः पाटलैः सुरभीकृतम् ॥
वस्त्रपूतं स्वक्षतरं पानीयं च निवेदयेत् ।
स्ववित्तशक्त्या गोविन्दं बुद्ध्या सम्पूज्य शुद्धया ॥
द्विजेभ्यो भोजनं दद्यात् सर्वकामसमृद्धये ।
संस्कृते चानले विष्णुमावाह्यार्घ्यादिभिर्यजेत् ॥
हविरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरेव वा हुत्वा शेषं
क्वचिद्रक्ष्य घृतेनाष्टशत हुनेत् ॥
सम्पात्य कलशद्वन्द्वे निषिच्येमौ च दम्पती ।
अभिषिच्य पुनस्ताभ्यां ध्यायंस्तोयमयं हरिम् ॥
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा हविः शेषं प्रदापयेत् ।
कृष्णं ध्यात्वा तु तत्पत्नी तमादाय सुखाशने ॥
आसीना प्राङ्मुखी भूत्वा कृष्णमेव प्रभक्षयेत्
सुभुक्तान् ब्राह्मणवराँस्ताम्बूलैमेदकादिभिः ॥
प्रतर्प्याथ नमस्कृत्य विष्णु ध्यावाथ तदद्विजान् ।
ततस्ताभ्यामिष्टसिद्धिर्युवयोरस्त्विति द्विजः ॥
ब्रूयस्तौ च सुसन्तुष्टौ फलितं नोऽभिवाञ्छितम् ।
इति स्मरन्तावनतौ भुञ्जीयास्तामनन्तरम् ।
एवं यः कुरुते विप्रो वित्तशाठ्यविवर्जितः ।
विष्णुभक्त्या विशिष्टोऽयं द्वादश्यां सितपक्षके ।
सोऽचिराल्लभते पुत्रमायुष्मन्तं सुवर्चसम् ।
सन्ततेश्चवापि कर्तारं विष्णुभक्तं महामतिम् ॥
दरिद्रः कुर्तुमेवं यो न शक्नोति द्विजोत्तमः ।
जपेद्वा तर्पयेद् वापि सोऽपि पुत्रवाप्नुयात् ।

शुक्लपक्ष में दशमी तिथि के बाद होते हुए भिनसहरा एकादशी के आरम्भ में विष्णु भगवान की पूजा करें ।

पूजा के निमित्त कल्याणप्रद वस्तुओं को लेकर स्थापित पात्र में घृत भरें, कपूर की बत्ती का उत्तम दीप प्रज्वलित करें, अष्टदल कमल बनाकर उस पर हरि को स्थापित कर पूजा करें, दो कलश अनेक उपचार वस्तु से अथवा परिवारि वृक्ष के कषाय से पूर्ण करें, उस पर नारायण की पूजा भक्ति से करें और दोनों कलशों की पूजा करके स्थिर चित्त कर अष्टोत्तर सहस्त्र (१००८) वा अष्टोत्तर शत (१०८) बार मन्त्र को जपें।

बाद द्वादशी के दिन विधिपूर्वक गोविन्द की पूजा करके शाल्यन्न-पायस-स्वादिष्ट गुड़ से मिला गोघृत दाल भात के सहित फल के सदृश सब पक्वान्न स्वादिष्ट चिकना दधि खण्ड के समान, सुवर्ण के पात्र में धर पात्रभूत श्रीविष्णुजी को निवेदन करें। ठंडा कपूर पाटल से मनोज्ञ तथा वस्त्र से छाना हुआ स्वच्छ जल निवेदन करें।

ब्राह्मणों को विष्णु तुल्य बुद्धि से जानकर अपने ध न शक्ति के अनुसार श्रद्धा से समस्त कार्य की वृद्धि के निमित्त भोजन करावें।

संस्कारित अग्नि में विष्णु का आवाहन कर अर्घादि से पूजन करें, १०८ आहुति वा १० आहुति घृत की देय, शेष कुछ रख लें। फिर १० घृत की आहुति दें। दोनों कलश के जल से स्त्री के सहित यजमान को स्नान करावें, फिर अभिषेक करें, फिर वह सपत्नीक जलमय नारायण का ध्यान करें।

१०८ अष्टोत्तरशत जप करें, हवि का जो शेष धरा है उसको यजमान की स्त्री को दें, वह उस हवि को

लेकर सुखासन पर पूर्वमुख बैठ कृष्ण भगवान का ध्यान कर हवि को खा जाये।

आनन्द से ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद लड्डू और पान दोनों से पुनः तृप्त कर नमस्कार करके विष्णु भगवान को और ब्राह्मणों को नमस्कार करें। ब्राह्मण कहें कि कृष्णजी और ब्राह्मणों से तुम दोनों की इष्टसिद्धि होगी। वह स्त्री पुरुष अच्छे प्रकार सन्तुष्ट हों हम लोगों का वाञ्छित फलित हुआ ऐसा स्मरण करते हुए इसके अनन्तर भोजन करें।

इस प्रकार जो ब्राह्मण वित्त की शठता छोड़कर करेगा भगवान की भक्ति से शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि को उसको शीघ्र दीर्घायु सुन्दर पुत्र का लाभ होगा। वह सन्तान वंशकर्ता, विष्णुभक्त, महाबुद्धिमान् होगा। जो दरिद्र ब्राह्मण इस विधि को नहीं कर सकता है वह जप करे या तर्पण करे वह पुत्र को पावेगा अर्थात् उसको पुत्र होगा।

॥ इति हविर्भक्षणप्रकारः ॥

(८) अथ भृगुसंहितोक्तसन्तानगोपालमन्त्र

८४ अर्णः

औं ऐं ह्रीं क्लीं आं वं वासुदेवाय सकलजन्मान्तरार्जितपापविध्वंसनाय श्रीमते देवकीसूनवे गोविन्दाय ते नमः पुत्रं जीवयोगसम्पन्नं देहि देहि मध्ये मा खण्डितं कुरु-कुरु प्रतिपक्षात् सौख्यं वितर वितर वं आं क्लीं ह्रीं ऐं ओम् ।

विधि-चाँदी के ६ अंगुल लम्बे-चौड़े पत्र पर अष्टगन्ध से अनार की लेखनी से पुरुष का रूप बनावे, उसमें मुख, हृदय, बाहु, नाभि इन पाँच स्थान में प्रणव लिखे, सुवर्ण वा रजत अथवा ताम्र के फल बिना टूटे हुए चावल से पूर्ण कर उसे वेदी पर धरें। कलश के ऊपर शुक्ल वस्त्र १२ हाथ का धर उसके ऊपर पान पत्ता धर, उस पर मूर्ति धर आवाहन प्राणप्रतिष्ठा कर षोडशोपचार से पूजा करे।

इनके पूजा के पहले दीप प्रज्वलित कर पवित्र ध ारण कर आचमन प्राणायाम विष्णु का स्मरण कर स्वस्तिवाचनादि के सकल कार्य कर गणेशादि की पूजा करें। फिर जप करने वाले का वस्त्रोपवस्त्र, पात्रोपपात्र द्रव्य मुद्रिका आचमनी आसन मालादि से वरण करें।

यन्त्रोद्धारः

कामं मध्ये स्वरयुगलसतकेशरेऽप्यष्ट-
पत्रेष्वालिख्यैवं झलनिधिमितान् यन्त्रवर्णान् क्रमेण ।
भूयो हलभिः परिवृतमिदं भू पुरस्थं तदेतद्यन्त्रं

सद्यो वितरति नृणां पुत्रपौत्रादिवृद्धिम् ॥

पहले कमल बनावे; सकी कर्णिका में कामबीज (क्लीं) लिखें, उसके बाद पुत्र की अभिलाषा वाले का नाम स्त्री के सहित लिखें, फिर अष्टपत्र केशर में अकारादि को १६ स्वर हैं उनमें से दो-दो को लिखें, फिर दल के मध्य में वंशगोपाल का मन्त्र चार-चार अक्षर लिखें, फिर उसके बाहर वृत्त बनाकर उसमें ककारादि हल वर्ण लिख के वेष्टित करें, फिर भूपुर बनावें।

यह यन्त्र मक्खन पर लिखें या सूक्ष्म सुवर्ण के पत्र पर लिखें। अनार की कलम से अष्टगन्ध से लिखना समुचित होगा। फिर इस यन्त्र को स्त्री खा जाय तो पुत्र होता है।

बन्ध्यानां पुत्रोत्पादनार्थं सन्तानगोपालविधानम्

प्रायः पाप विजनीयाश्रितं तस्य विशोधनम्।
कृत्वा शुद्धिं तु देहस्य ततः कर्माणि कारयेत ॥

पहले शरीर की शुद्धि के निमित्त जन्मान्तरीय सन्ततिप्रतिबन्धकारक दुरदृष्ठजनितदोषपरिहारार्थ कर्माधिकार की सिद्धि के निमित्त यथाशक्ति प्रायश्चित को करें।

महार्णवे

त्रिंशद्भिश्च तथा गोभिरर्धं तुं मुनिभिः स्मृतम्।
बन्ध्यात्वस्य निरासार्थं धेनुं दद्याच्च हेमजाम् ॥
तथा यज्ञोपवीतं तु दद्याद्धेममयं शुभम्।
षोडशानि च शूर्पाणि फलयुक्तानि दापयेत् ॥
एवं कृत्वा विधानेन बन्ध्यात्वात् प्रतिमुच्यते।
सत्पुत्रं लभते नूनमेतत् कर्म प्रयोजयेत् ॥

महार्णव के ग्रन्थ में तीस के आधे १५ गोदान को अर्धप्रायश्चित कहा है। बन्ध्यापन को छोड़ने निमित्त स्वर्णगोदान करे और हेममय (सुवर्ण) का यज्ञोपवीत दान करे, सोलह सूप फल भरके दें।

इस प्रकार की विधि करने से बन्ध्यापन से मनुष्य छूटता है तब उसको निश्चय इस कर्म के प्रयोग से सत् पुत्र का लाभ होता है।

तत्र धेनुमानमाह-सूर्योर्णवेऽपि हेमाद्रिवचनम्
धेनुं निष्कचतुष्कस्य तदर्धं स्यात्तदर्धकम्।
तदर्धस्य च वा तत्र चतुर्थांशेन वत्सकम्॥

चार निष्क की धेनु वा दो निष्क की अथवा एक निष्क की वा आधे निष्क की निर्माण करे और उसके चतुर्थांश का बछड़ा बनाके दान देय, इसी प्रकार स्वर्ण का यज्ञोपवीत भी बनाकर दान दें, 'सोमो धेनु' इस मन्त्र से होम करें। इसकी विशेष विधि महार्णवादिक में है, ...यश्चित करने के बाद दशविधि का स्नान करें, गोदानों को करें, फिर पञ्चगव्य का प्राशन करके उस दिन उपवास करें।

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिबेन्धनम्॥

तब जिस अच्छे दिन में चन्द्रमा और तारा का विचार ठीक हो और उस दिन पुरुष संज्ञक नक्षत्र हो उस दिन सन्तानगोपाल का विधान करें।

जितने अक्षर का मन्त्र हो उतना लक्ष जप करें अर्थात् जिस मन्त्र को ३ लक्ष लिखा है वह ३ लाख और जिसको एक लक्ष लिखा है उसको एक लाख जप कर हवनादि

करके पुनश्चरण करें और कलियुग के लिए तो 'कलौ चतुर्गुणः प्रोक्तः' इस वचन के अनुसार चौगुना होना उचित है।

मूल मन्त्र के जप करने के लिये आठ व चार ब्राह्मण का वरण करें और सम्पूर्ण कर्म के अधिकारार्थ शान्त उस विधि के जानने वाले को आचार्य बनावें।

पाँच प्रकार के बन्ध्यापन के दोष की शान्ति के लिए लक्ष संख्या पार्थिव लिङ्गकी पूजा करें। शतचण्डी पाठ, मन्युसूक्तजप, नवग्रह जप, रुद्राष्टाध्यायी जप, हरिवंश श्रवण करें। मन्त्रित जल से भरे हुए दस घड़े जल से स्त्री के सहित यजमान नित्य स्नान करें।

जप होने पर दशांश होम तर्पण, ब्राह्मण, भोजन, दान, तप करें। कुण्ड की पूजा करके फिर मण्डल देवता की पूजा करें। यही मुख्य योनिकुण्ड है। इस प्रकार मण्डप कुण्ड से निवृत्त होकर गणेश लोकपालादि वास्तुयोगिनी नवग्रह-मातृका का स्थापन, मूल देवता का स्थापन, तोरण ध्वजा पताका का स्थापन करके उन-२ देव के मन्त्रों से उन स्थानों में पूजा करके कुण्ड का संस्कार कर अग्नि स्थापन करें।

दशांश होमकर तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण-भोजन नवग्रहादि मण्डल चतुष्टय देवता की यथाशक्ति सोने की प्रतिमा बनावें और प्रधान देव की प्रतिमा आठ निष्क वा तीन निष्क सुवर्ण की बनवावें। अग्नि से तपाकर घृत में धर फिर स्थापित कर पूजा करें, अन्त में आचार्य को देकर दक्षिणा दें।

कृष्णविग्रहप्रकारः

यदि शक्ति होय तो कृष्ण की मूर्ति बनवावें। एकादश सुवर्णादि कलश "महीद्यौ" मन्त्र से भूमि स्पर्श कर "धान्यमसि" इस मन्त्र से कलश के नीचे अन्न धरें, फिर उस अन्न पर कलशों को धरें, फिर "गंगे" इस मन्त्र से जल भरें 'पञ्चनद्यः' इससे तीर्थ का जल, पंचरत्न, पञ्चामृत, पञ्चगव्य, पञ्चपल्लव , पञ्चत्वच, सप्तमृत्तिका, पूगीफल द्रव्य जिस-2 के छोड़ने का जो मन्त्र है उससे छोड़ें। फिर उस पर धान्य से पूर्ण पात्र धरें, वस्त्र तथा फल धरें, उन सब कलशोपरि कमल का पुष्प धरें।

सब पर सोने की आठ-२ निष्क की प्रतिमा ध रें। उन-२ देवों के नाम से अलग-२ प्राणप्रतिष्ठा करावें। इष्ट देवों के साथ पुरुषसूक्त से आवाहनादि षोडषोपचार पूजा करें। आवाहन में यह मन्त्र भी पढ़ें-

आगच्छ देव भगवञ्छीगोपाल नमोऽस्तुते।
मम सन्तानसिद्ध्यर्थं सानिध्यं कुरु सर्वदा॥

देवता के शयनार्थ आन्दोलक चामर छत्र आदर्श आदि भी धरें। घृत, तेल, पायस से होम करें, पूर्णाहुति करके तर्पण मार्जन करें, कल्याणकारी वस्तुओं का सम्पादन करें।

आचार्य ऋत्विज आदि को वस्त्र अलंकारों से सन्तोषित करके, आचार्य को मूर्ति दान कर जप करने वालों को दक्षिणा देकर अन्य दान के योग्य ब्राह्मणों को दक्षिणा दें। तिल-सर्पिः भी पूजा में लिखा है।

देवतानां व्रतैर्युक्तं सन्तुष्टहृदयान्वितम्।
वेदाध्ययनसंयुक्तं सपतनीकं सपत्रकम्।

सुगन्ध वस्त्रमाल्याद्यैः कुण्डलैरङ्गुलीयकैः ।
तस्मिन् सन्तानगोपालदानं भक्त्या समाचरेत् ॥

दानमन्त्रः

करुणा देवेश नवनीताशनप्रिय ।
देहि मे पुत्रसन्तानं कुल वृद्धिकरं मम ॥

ऐसी प्रार्थना पूर्वक ब्राह्मण को सुवर्ण दक्षिणा दें। आचार्य को द्विगुण गोमिथुन (गाय बैल) देकर सन्तोषित करें। ब्राह्मणों को भोजन करावें, आशीर्वाद ग्रहण कर यथासुख बिहार करें।

इस प्रकार करने से सन्तान होती है। भगवान गोपालजी स्वयं अवतार लेंगे।

॥ इति सन्तानगोपाल विधि समाप्तः ॥

मन्त्रचन्द्रिका में जीवपुत्र वृक्ष की समिधा व फल का हवन लिखा है, वह न मिलने पर तिल, घी व पायस से होम करना लिखा है। यहाँ पार्थिव पूजा एकोत्तर वृद्धि लक्ष की अलग-२ है, इसके अभाव में लक्षादि विधान के साथ एक तन्त्र से करें।

यथा लिङ्गार्चन विधाने

एकोत्तरविधाने तु पृथक्-पृथक् पूजनं च कार्यम्।
लक्षलिङ्गप्रकारे तु सहैक तन्त्रेण कारयेत्।

लिङ्ग विधान में दशांश हवन का नियम नहीं है, किन्तु जितने लिङ्गों की पूजा करें उतनी आहुति दें।

तदुक्तं मन्त्र महोदधौ लिङ्गार्चनदीपिकायां च-यत्संख्याकं यजेल्लिङ्गं तत्संख्यं होमचरेत्।

अथ पुत्रप्रदो नागेन्द्रयन्त्रः

भूर्जे कुंकुमगोरोचनादिना लेख्यम्। सचन्द्रविन्दुयुतहकारगर्भे साधकनाम लेख्यावेष्टय,ततोऽष्टदलेषु अनन्तादि अष्टनागाः स्वरैर्वैष्टनं रेखाभ्यां वृत्तम, इति।

यन्त्रस्य स्यात् हसोः जीव प्राणेदं समनुद्वयम्।
मध्ये बीजादधोजीवं विदिक्षु प्राणवर्णकन्॥
नेत्रे श्रोत्रे न्यसेत् पार्श्वे नेत्रे इं ईं उं ऊँ श्रुती।
यन्त्रराजाय विद्महे वरप्रदाय धीमहि।
तन्नो यन्त्रः प्राचोदयात्॥

॥ इति यन्त्र गायत्री ॥

भोजपत्र पर कुंकुम, गोरोचन से , नागेन्द्र यन्त्र को लिखें, मध्य में चन्द्रबिन्दु के सहित हकार को लिखें, साधक के नाम से वेष्टित करें, फिर अष्टदल में अनन्तादि आठ नागों को लिखें, स्वरों से वेष्टित करें, फिर दो वृत्त (गोलाकार) बनावें।

यन्त्र का हसोः जीव प्राण ये देह दो है। मध्य में बीज नीचे जीव विदिशाओं में प्राणवर्ण को जाने। नेत्रों में इं ई कान में ऊँ ऊँ है।

आवाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्।
ऊँ यन्त्रराज नमस्तेऽस्तु रक्ष माँ देहि मे सुतान।
हं बीजेनाष्टाभिर्नागैः षोडशस्वरशक्तिभिः॥
श्रियमायुश्च सौभाग्यामारोग्यं सन्ततिं ध्रुवाम्।
बीजशक्तिं च नागाँश्च स्वरान् सम्पूज्य धारयेत॥

प्रणमेत् प्रत्यहं यन्त्रं प्रार्थयेद्भक्तितः सुधीः ।
आश्लेषायां च पञ्चम्यां विशेषेणार्चयेन्नमेत् ।।
नागेन्द्रयन्त्रमुद्दिश्य ब्रह्मचारींश्च भोजयेत् ।
दुष्टग्रहसुतस्थाने तस्य दोषप्रशान्तये ।।
तस्य नागभयं न स्यात् तत्कुलं रक्षयन्ति हि ।
नागयन्त्रमिदं धार्य सम्पत्सन्ततिवर्धनम ।।

अथाष्टनागाः

अनन्तः शङ्खपालो मा तक्षकः पुण्डरीकक्षः ।
पद्मः कर्कोटको वासुकीनागः कुलिकोऽवतु ।।

।। इति ।।

नागेन्द्र यन्त्र का आवाहनादि षोडशोपचार पूजन करे "ॐ यन्त्रराज नमस्तेस्तु" इत्यादि मन्त्र से इस यन्त्र को नित्य प्रणाम करें और प्रार्थना करें। श्रेष्ठ नक्षत्र और पंचमी तिथियों में विशेष पूजा और नमस्कार कर प्रार्थना करें।

इस नागेन्द्र यन्त्र के निमित्त पुत्रस्थान में दुष्टग्रह के दोषों के शमनार्थ ब्रह्मचारियों को भोजन करायें। उसको सर्प का भय नहीं होता है तथा धन-पुत्र की वृद्धि होती है।

अष्टनागों के नाम प्रार्थना

१. अनन्त　　२. शङ्खपाल
३. तक्षक　　४. पुण्डरीक
५. पद्म　　६. कर्कोट
७. वासुकी　　८. कुलिक

ये सब मेरी रक्षा करें।

।। इति श्री सन्तानगोपालमन्त्रविधिः सम्पूर्णः ।।

पुत्र प्राप्ति के अन्य प्रयोग

(१) द्वादशाक्षर मन्त्र प्रयोग

भगवान शंकर का वचन है कि आम के किसी मनोरम वृक्ष की डाल या तने पर सुखासीन होकर निम्न मन्त्र का प्रतिदिन एकाग्र मन से यथाशक्ति जप करें, तो अपुत्र भी पुत्रवान् होता है-

ॐ हां ह्रीं हूँ पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।

(२) पुत्रदायक यन्त्र

शङ्कर पितु

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

कौर बरन लक्ष्मीपति

शङ्कर मातु

पापी के जारू दीहा

किसी शुभ नक्षत्र-काल में गोरोचन से भोजपत्र पर उक्त यन्त्र को लिखें। फिर गुग्गुल की धूप से इसे सुधूपित कर सोने या चाँदी के पत्र में इसे जड़वा लें। इस यन्त्र को बंध्या स्त्री के कण्ठ में बाँधें, तो जिसके पुत्र न होता हो अथवा होकर मर जाता हो, उसके निश्चय ही पुत्र उत्पन्न होकर जिवित रहता है।

(३) वसुपुत्रद श्रीकृष्ण मन्त्र

विनियोग-अस्य श्रीवसुपुत्रद श्रीकृष्णमन्त्रस्य नारदऋषिः, गायत्री छन्दः,श्रीकृष्णो देवता, वसुपुत्रप्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास-क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः, क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, क्लूं मध्यमाभ्यां वषट्, क्लैं अनामिकाभ्यां हुं, क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्गन्यास-क्लां हृदयाय नमः, क्लीं शिरसे स्वाहा, क्लूं शिखायै वषट्, क्लैं कवचाय हुँ, क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, क्लः अस्त्राय फट्।

ध्यान

बालनीलमुदारकान्तिविभवं हस्ताम्बुजे दक्षिणे
विभ्राणं परिपक्वदौग्धकवलं नन्दात्मजं सुन्दरम्।
वामे तद्दिदनजातमुद्धतरसं दध्युत्थपिण्डं शुभं
वैयाघ्रेण नखेन राजितगलं त्यक्तांशुकं भावयेत्॥

इस प्रकार ध्यान कर मानसोपचार से पूजन करें। तदनन्तर एकाग्र होकर निम्न मन्त्र का जप करें। इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख जप से होता है। मन्त्र इस प्रकार है-

मन्त्र

गोपालकवेषधराय वासुदेवाय हुँ फट् स्वाहा।

पुरश्चरण के पूर्ण होने पर शर्करा-घृत के हवि से दशांश हवन करें। फिर सरोज (कमल) के मध्य में स्थित भगवान कृष्ण का पूजन कर उनके मुख में उक्त

मन्त्र से गो-दुग्ध, शुद्ध पके हुए केलों, दही और मक्खन से दशांश तर्पण करें।

इस प्रकार करने से एक वर्ष में ही पुत्र-लाभ होता है।

(४) सन्तानगोपाल मन्त्र

विनियोग-ओ३म् अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः, श्रीकृष्णः देवता, सन्तानप्राप्त्यर्थ जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास-नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्द से नमः मुखे, श्रीकृष्णदेवताय नमः हृदि।

करन्यास-देवकीसुत गोविन्द अंगुष्ठाभ्यां नमः, वासुदेव जगत्पते तर्जनीभ्यां स्वाहा, देहि मे तनयं कृष्ण मध्यमाभ्यां वषट्, त्वामहं शरण गतः अनामिकाभ्यां हुं, देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते! देहि मे तनयं कृष्ण, त्वामहं शरणं गतः कनिष्ठिकाभ्यां फट्।

अङ्गन्यास-देवकीसुत गोविन्द हृदयाय नमः, वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा, देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट्, त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुं, देवकी-सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते! देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट्।

ध्यान

शंखचक्रधरं देवं श्यामवर्णं चतुर्भुजम्।
सर्वाभरणसन्दीप्तं पीतवाससमच्युतम्॥
मयूरपिच्छ संयुक्तं विष्णुं तेजोपवृंहितम्।
समर्पयन्तं विप्राय नष्टानानीय बालकान्॥

दो हाथों में शंख-चक्र और शेष दो में गदा, पद्म

का ध्यान करें। यदि स्त्री साधिका हो तो निम्न प्रकार ध्यान करे-

स्वांगे सम्मुखसन्निविष्टममले रक्ताम्बुजे बालकं।
माणिक्योज्ज्वलबालभूषणगणं प्रोत्तप्तहेमद्युतिम् ॥
प्रेम्णालिंग्य मुहुर्मुहुः सुखवशात् संलालितं स्वात्मना।
पुत्रत्वेन विभावयेन्मुररिपुं पुत्रार्थिनी कामिनी ॥

ध्यान करने के बाद मानसोपचारी से पूजन कर निम्न मन्त्र का जप करें। एक लाख जप से इस मन्त्र का पुरश्चरण होता है-

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

पुरश्चरण के पूर्ण होने पर गोघृत से हवन कर तर्पणादि करें। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तदनन्तर पुत्रार्थी साधक शुक्ल पक्ष की दशमी की अर्धरात्रि में स्वस्तिकमण्डल की रचना कर उसमें विराजमान भगवान विष्णु की उक्त मन्त्र से पूजा करें। इससे अवश्य ही चिरंजीवी विनीत पुत्र की प्राप्ति होती है।

शक्तिं बिना महेशानि सदाहं शवरूपकः।
शक्तियुक्तः सदा देवि शिवोऽहं सर्वकामदः ॥
वेदशास्त्रपुराणानि, सामान्यबनिता इव।
अयं तु शाम्भवी विद्या, गुप्ता कुलवधूरिव ॥

परन्तु

कले प्राबल्यसमये, सर्वधर्मविवर्जितें।
गोपनात् कुलधर्मस्य कौलोऽपि नारकी भवेत् ॥

॥ इति पुत्र प्राप्ति के अन्य प्रयोग समाप्तः ॥